

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ अष्टसप्ततितमः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ अष्टसप्ततितमः सर्गः ॥

रारणस्याञ्जया मकराक्षस्य युद्धाय प्रस्थानम्

निकुम्भं निहतं श्रुत्वा कुम्भं च विनिपातितम्।  
रारणः परमामर्षी प्रजज्ज्वालानलो यथा ॥ 6.78.1 ॥

नैरृतः क्रोधशोकाभ्यां द्वाभ्यां तु परिमूर्च्छितः।  
खरपुत्रं विशालाक्षं मकराक्षमचोदयत् ॥ 6.78.2 ॥

गच्छ पुत्र मयाहञ्जोष्टो बलेनाभिसम्ब्रितः।  
राघरं लम्बणं चैव जहि तौ सरनौकसौ ॥ 6.78.3 ॥

रारणस्य रचः श्रुत्वा शूरमानी खरात्त्रजः।  
वाचमित्यब्रवीद्दुष्टो मकराक्षो निशाचरम् ॥ 6.78.4 ॥

सोऽभिराद्य दशग्रीवं कृत्वा चापि प्रदक्षिणम्।  
निर्जगाम गृहाच्छुद्राद् रारणस्याञ्जया वली ॥ 6.78.5 ॥

समीपस्थं बलाध्यक्षं खरपुत्रोऽब्रवीद् रचः।  
रथमानीयतां तूर्णं सैन्यं व्रानीयतां व्ररात् ॥ 6.78.6 ॥

तस्य तद् रचनं श्रुत्वा बलाध्यक्षो निशाचरः।  
स्यन्दनं च बलं चैव समीपं प्रत्यपादयत् ॥ 6.78.7 ॥

প্রদক্ষিণং রথং কুংরা সমারুহ্য নিশাচরঃ।  
সূতং সঞ্চোদযামাস শীঘ্রং রৈ রথমারহ ॥ 6.78.8 ॥

অথ তান্ রাক্ষসান্ সর্ৱান্ মকরাক্ষোহব্রৱীদিদম্।  
যুযং সর্ৱে প্রযুধ্যধ্বং পুরস্তান্মম রাক্ষসাঃ ॥ 6.78.9 ॥

অহং রাক্ষসরাজেন রারণেন মহাত্মনা।  
আজ্ঞপ্তঃ সমরে হস্তং তারুবৌ রামলক্ষ্মণৌ ॥ 6.78.10 ॥

অদ্য রামং রধিষ্যামি লক্ষ্মণং চ নিশাচরাঃ।  
শাখামৃগং চ সুগ্রীরং রানরাংশ্চ শরোত্তমৈঃ ॥ 6.78.11 ॥

অদ্য শূলনিপাতৈশ্চ রানরাণাং মহাচমুম্।  
প্রদহিষ্যামি সম্প্রাপ্তাং শুক্লেন্ধনমিরানলঃ ॥ 6.78.12 ॥

মকরাক্ষস্য তচ্ছুংরা রচনং তে নিশাচরাঃ।  
সর্ৱে নানাযুধোপেতা বলরন্তঃ সমাহিতাঃ ॥ 6.78.13 ॥

তে কামরূপিণঃ কুরা দংষ্টিণঃ পিঙ্গলেক্ষণাঃ।  
মাতঙ্গা ইর নর্দন্তো ধ্বংসকেশা ভয়ারহাঃ ॥ 6.78.14 ॥

পরিৱার্য মহাকাযা মহাকাযং খরাঅুজম্।  
অভিজগুস্ততো হৃষ্টাশ্চালযন্তো রসুন্ধরাম্ ॥ 6.78.15 ॥

শঙ্খাভেরীসহস্রাণামাহতানাং সমন্ততঃ।  
ক্ষুরেলিতাস্ফোটিতানাং চ তত্র শব্দো মহানভূৎ ॥ 6.78.16 ॥

প্রভ্রষ্টোহথ করাৎ তস্য প্রতোদঃ সারথেস্তদা।  
পপাত সহসা দৈৱাদ্ ধ্বংসস্য তু রক্ষসঃ ॥ 6.78.17 ॥

তস্য তে রথসংযুক্তা হযা রিক্রমরর্জিতাঃ।  
চরণৈরাকুলৈর্গংৱা দীনাঃ সাস্রমুখা যযুঃ ॥ 6.78.18 ॥

প্ররাতি পরনস্তস্মিন্ সপাংসুঃ খরদারুণঃ।  
নির্যাণে তস্য রৌদ্রস্য মকরাক্ষস্য দুর্মতেঃ ॥ 6.78.19 ॥

তানি দৃষ্ট্বা নিমিত্তানি রাক্ষসা রীর্যরত্তমাঃ।  
অচিন্ত্য নির্গতাঃ সর্বে যত্র তৌ রামলক্ষ্মণৌ ॥ 6.78.20 ॥

ঘনগজমহিষাঙ্গতুল্যবর্ণাঃ  
সমরমুখেশ্বরসকৃদগদাসিভিন্নাঃ।  
অহমহমিতি যুদ্ধকৌশলাস্তে  
রজনিচরাঃ পরিবদ্রমূর্খস্তে ॥ 6.78.21 ॥

॥ ইত্যার্ষে শ্রীমদ্রামাযণে রাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে যুদ্ধকাণ্ডে অষ্টসপ্ততমঃ সর্গঃ ॥